सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '1A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी - गद्य का विकास
c. गद्य - शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य - पाठ और श्रुत - पाठ
e. गद्य - पाठ के रूप
f. गद्य - पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य - पाठ
h. गद्य की पाठ्य - पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास - साहित्य का विकास
e. उपन्यास - शिक्षण
f. उपन्यास - शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास - शिक्षण विधि
h. शिक्षण - क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी - नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक - शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक - शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक - शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यासों के तत्त्व

(1) कथा वस्तु—सचेष्टता तथा गतिशीलता ही मानव-जीवन है। उसकी इस गतिशीलता से ही उसके जीवन की घटनाओं का प्रादुर्भाव होता है। जीवन की इन घटनावलियों को ही हम कथा वस्तु कहते हैं। कथा वस्तु को रोचक एवं आकर्षक होना चाहिए। इसे कथनीय भी होना चाहिए। परस्पर विरोधी बातों का अनर्गल सम्बन्ध न स्थापित किया जाए। कथा के सभी अंगों में समानता होनी चाहिए। जिस बात का स्पष्ट और सीधा सम्बन्ध कथावस्तु से नहीं है उसे लेकर उपन्यास का कलेवर नहीं बढ़ाना चाहिए।

(2) पात्र तथा कथोपकथन—इन घटनाओं का विधाता मानव ही उपन्यास में पात्र होता है। ये पात्र परस्पर वार्तालाप द्वारा कथा-वस्तु को आगे बढ़ाते हैं। यही तत्त्व कथोपकथन कहलाता है। कभी-कभी किसी उपन्यास में किसी पात्र के कथन को आवश्यकता से अधिक लम्बा-चौड़ा कर दिया जाता है। शिक्षण के समय इसे छोटा कर देना चाहिए। कोई भी कथन असम्बद्ध या व्यर्थ न प्रतीत हो।

(3) देशकाल—ये घटनाएँ किसी समय या देश-विशेष में ही होती हैं। इसी समय और देश-विशेष को देशकाल, परिस्थिति तथा वातावरण कहते हैं। देशकाल को परस्पर विरोधी नहीं होना चाहिए। कोई देशकाल तुच्छ या सामान्य नहीं होता। कथावस्तु के अनुसार ही देशकाल का महत्त्व होता है। देशकाल को शिक्षण के समय इस प्रकार उभारना चाहिए कि घटनाएँ स्वाभाविक प्रतीत हों और एक-दूसरे से शृंखला के समान जुड़ी हुई प्रतीत हों।

(4) शैली—जीवन में विकसित होने वाली इन घटनाओं को उपन्यासकार एक ढंग विशेष से दर्शाता है, यही ढंग लेखक की शैली होती है। शब्द-प्रयोग का ढंग शैली है। विचारों या भावों को एक विशेष ढंग से संगठित करना शैली है। आन्तरिक विचारों के प्रकटीकरण हेतु शब्दों का विशेष विधान शैली है। शैली मनुष्य में व्याप्त है और मनुष्य शैली में व्याप्त है। शैली भाषा के द्वारा अपने विचारों या भावों के प्रकट करने का एक वह विलक्षण ढंग या रीति है जो भाषा और शब्दावली से पृथक् रहती है।

Scanned with CamScanner

"उपन्यासकारों में से अधिकांश का कवि होना इन्हें निश्चय ही रचनात्मक स्तर पर कुछ सहायता देता है, पर अच्छा उपन्यासकार होने के लिए कवि होना जरूरी हो, ऐसा नहीं है। इसका बहुत अच्छा उदाहरण स्वयं जैनेन्द्र हैं, जो इस धारा के अग्रणी हैं। अनुभव को महत्त्व देने के कारण उन्होंने शिल्प से अधिक भाषा को केन्द्र में रखा है, क्योंकि अनुभव और भाषा एक-दूसरे के निकटतम हैं।

उपन्यास में, चाहे जितना संक्षिप्त हो, वर्णन चाहिए ही। और यह वर्णन आधुनिक कविता के अमूर्त और विरूप होते विधान द्वारा संभव नहीं है, क्योंकि ये प्रक्रियाएँ व्यंजना की हैं, वर्णन की नहीं। यहीं आधुनिक उपन्यासकार का रचना-संकट है और उसकी क्षमता को एक चुनौती है। वर्णन की परंपरित स्थूल भाषा और नयी कविता की अमूर्त और विरूपीकृत भाषा को एक रचना-विधान में कैसे संघटित किया जाए यही समस्या है।"

(5) **उद्देश्य**—प्रत्येक उपन्यासकार जीवन में होने वाली घटनाओं को अपने एक विशेष दृष्टिकोण से देखता है। फलतः प्रत्येक साहित्यिक रचना में इसके निर्माता का व्यक्तित्व प्रच्छन्नरूपेण विद्यमान रहता है। उपन्यास के ऊपर पड़ी हुई व्यक्तित्व की इस छाया को हम उद्देश्य के नाम से पुकारते हैं। मानव जीवन के साधारण और असाधारण दोनों रूपों के पृथक् प्रभाव पड़ते हैं और उपन्यासकार उनमें से जिनका अनुभव करता है उन्हें चुनकर वह उनसे कुछ सिद्धान्त निकालकर उद्देश्य के रूप में रख लेता है और उन्हीं का प्रतिपादन उपन्यास में करता है। जीवन सम्बन्धी ऐसे ही सिद्धान्त उपन्यासकार के उद्देश्य हुआ करते हैं।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यासों का वर्गीकरण

साधारणतः उपन्यासों का वर्गीकरण निम्न रूप में किया जाता है—

(1) घटना-प्रधान उपन्यास,

(2) सामाजिक तथा व्यवहार सम्बन्धी उपन्यास,

(3) अन्तरंग जीवन के उपन्यास,

(4) देशकाल सापेक्ष और निरपेक्ष उपन्यास।

(1) घटना-प्रधान उपन्यास—उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। इस व्यवस्था में 'कथा' शब्द सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। कथा कोई हो, काल्पनिक अथवा वास्तविक—उसमें घटनाएँ अवश्य होंगी। जिस कथा में ये जिज्ञासा बनी रहती है—'फिर क्या हुआ ?', 'आगे क्या हुआ ?' और 'अन्त में क्या होगा ?' आश्चर्य के इस विश्वजनित तत्त्व पर खड़े किये गये उपन्यासों को हम घटना-प्रधान कहते हैं; जैसे—चन्द्रकान्ता सन्तति आदि। ऐसे उपन्यास बहुधा सुखान्त होते हैं।

(2) सामाजिक उपन्यास—समाज की परम्परानुयायिनी घटनाओं को लक्ष्य में रखकर लिखे गये उपन्यास को सामाजिक, चरित्र-प्रधान अथवा व्यवहार-विषयक उपन्यास कहते हैं। ऐसे उपन्यासों में समाज के नर-नारियों के क्रियाकलाप और पारस्परिक व्यवहार को ही वर्णित किया जाता है। इसमें आकर्षण कथानक से हटकर पात्रों, उनके पारस्परिक व्यवहारों तथा समाज की रीति-नीति में केन्द्रित हो जाता है। प्रेमचन्दजी के उपन्यास इसी श्रेणी में आते हैं।

(3) अन्तरंग जीवन के उपन्यास—प्रादेशिक सीमाओं को संकुचित कर काल या समय की गति को ही प्रधानता देते हुए पात्रों के सुख-दुःख के अतिरंजित एक स्मृति मात्र बना देने वाले उपन्यास इस कोटि में आते हैं। जीवन के उत्स उद्‌घाटन में समाजादि सब तत्त्व अप्रधान हो जाते हैं और एकमात्र जीवन तथा उसका सतत् प्रवाह रह जाता है। इनमें व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा एक साथ झलक उठते हैं।

(4) देशकाल सापेक्ष और निरपेक्ष उपन्यास—ऐसे उपन्यासों में देशकाल दोनों ही ध्यानस्थ रखे जाते हैं अथवा दोनों ही समान रूप से विस्मृत कर दिये जाते हैं। ऐसे उपन्यासों का निदर्शन संस्कृत में बाणभट्ट द्वारा रची कादम्बरी है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण - 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्त्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यास तथा उसका शिक्षण

उपन्यास क्या है ?

मानव ने अपनी रमण और कौतूहल वृत्तियों के कारण ही विश्व में दृष्टिगोचर होने वाले आत्म तथा अनात्म की अथवा आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक जगत् की अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से की है जिसमें वास्तु-कला, मूर्ति-कला, चित्रकला, संगीत-कला तथा काव्य-कला प्रमुख हैं।

साहित्य उन रचनाओं का नाम है जिनमें श्रोता एवं पाठक के मनोवेगों को प्रस्फुटित करने की शक्ति विद्यमान हो और जिनमें रागात्मक, बौद्धिक तथा रचनात्मक तत्त्वों का समावेश हो। अभिव्यंजक प्रणाली की दृष्टि से साहित्य-क्षेत्र में आने वाली उन समस्त रचनाओं के प्रधान भेद—कविता, निबन्ध, नाटक, उपन्यास तथा कहानी के रूप में लिखे जा सकते हैं।

जिस प्रकार आदिम पुरुष के कल्पनामय जीवन का भाषायी प्रकाशन पद्य रूप में हुआ था, उसी प्रकार आधुनिक पुरुष के यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति गद्य रूप में उपन्यास आदि के माध्यम से हुई है।

उपन्यास गद्य-साहित्य की ही एक विधा है जिसमें कोई लम्बी कथा दी जाती है। इतालवी में उपन्यास को नोवेला कहा जाता था और अंग्रेजी में इसे 'नावेल' कहा जाता है। नावेल का एक अर्थ नवीन भी है अतः स्पष्ट है कि नावेल में नवीनता का प्रत्यय निहित है। इसमें एक लम्बी कहानी होती है जो कल्पना-प्रधान होने के कारण नवीन होती है और पाठकों को आकृष्ट कर लेती है। पाठक इस विधा को पसन्द करते हैं। कुछ लोग उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति उप+न्यास के रूप में करते हैं। 'उप' का अर्थ है निकट और 'न्यास' का अर्थ है रखा हुआ, किन्तु व्युत्पत्तिपरक यह अर्थ उपन्यास के स्वरूप से मेल नहीं खाता है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार **प्रेमचन्द** का कथन है, "मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "उपन्यास जीवन की यथार्थताओं से रस खींचकर चित्त-विनोदन के साथ ही साथ मनुष्य की समस्याओं के सम्मुखीन होने का आह्वान लेकर साहित्य-क्षेत्र में आया था। उसके पैर ठोस धरती पर जमे हैं और यथार्थ जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों से छनकर आने वाला 'अव्याज मनोहर' मानवीय रस ही उसका प्रधान आकर्षण है।"

वस्तुतः उपन्यास का जन्म आधुनिक प्रजातन्त्रवाद से उत्पन्न हुई मध्यम श्रेणी की विपुल जनसंख्या के मनोरंजन के उद्देश्य को बनाकर हुआ था क्योंकि कविता तथा नाटक की अपेक्षा कहीं कम, रागात्मक होने के कारण उपन्यास पाठक की कल्पना और उसकी सहृदयता पर कम भार डालते हैं तथा पाठक अपनी इच्छा और सुविधा के अनुसार बिना किसी प्रयास के इन्हें पढ़ता चला जाता है। वह पौष्टिक खाद्य के समान श्रमपाच्य नहीं वरन् पेय के समान सहजगामी वस्तु है। पढ़ते समय विचारहीन, प्रेममुद्रा में मग्न पाठक के मन में उपन्यास रमणी के द्वारा सुनाये गये सिद्धान्त घर करते चले जाते हैं, परन्तु इसकी सहज लोकप्रियता में उसकी क्षण-भंगुरता भी छिपी है क्योंकि मनोरंजन के उद्देश्य से पढ़ने के कारण यह प्रभाव अस्थायी होता है। दूसरे प्रतिपाद्य विषय पर खड़ी होने वाली रचनाएँ चिरस्थायी नहीं रहा करतीं।

उपन्यास में घटना वर्णन व कथा-निरूपण के लिए बहुत अवकाश रहता है, परन्तु घटनाओं का यह क्रम पात्रों की चरित्र-प्रगति पर बाहर से न थोपा जाकर स्वयं उसके अन्तस से प्रस्फुटित होता है। रोमांस, स्वाभाविकता तथा रोचकता ही उपन्यास के सर्वप्रथम उपकरण हैं, लेकिन उपन्यास के रोमांस में भी प्रेम की आचारानुकूलता तथा शुचिता वांछनीय है क्योंकि उपन्यास और मानव-जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की एक काल्पनिक कथा है, अतः उपन्यासकार की कल्पना में वास्तविकता लाने के

Scanned with CamScanner

लिए उसे अधिक मार्मिक, स्वाभाविक तथा ग्राह्य बनाना और सुन्दर चयन शक्ति की सहायता से जीवन के किसी उद्दृष्टि अंग की रोचक रूपरेखा खींच देना अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यास-साहित्य का विकास

भारत में उपन्यास अपने वर्तमान रूप में पश्चिम से आया है। हमारा उपन्यास तो कादम्बरी के साथ समाप्त-सा हो गया था। अतः जहाँ यूरोप के उपन्यास में वहाँ की प्रतिभा का अनुक्रमिक विकास अविच्छिन्न रूप से दृष्टिगत् होता है वहाँ भारत की उपन्यास परम्परा में अनेक विच्छेद दिखाई पड़ते हैं। अतः आधुनिक उपन्यास का वास्तविक रूप तो यूरोप के सांस्कृतिक जागरण के साथ ही आरम्भ होता है। यह सामन्ती-प्रथा के ह्रास और नवोस्थित व्यापारी वर्ग का युग था। प्रारम्भिक इतालवी उपन्यासों में प्रेम और साहस की नैतिक और पौराणिक कहानियाँ होती थीं, जिनमें पतित स्त्रियों, दुराचारी पादरियों, असभ्य किसान-मजदूरों और कुलीन घरों के सामन्तों को पात्र बनाया जाता था।

इसी प्रकार हिन्दी गद्य-साहित्य के प्रारम्भिक युग में चार ग्रन्थ—सदासुखलाल का 'सुखसागर', मुंशी इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी', सदल मिश्र का 'नासिकेतोपाख्यान' और लल्लूलाल का 'प्रेमसागर' उल्लेखनीय हैं। इनको उपन्यास क्षेत्र में तो नहीं रखा जा सकता लेकिन इनसे एक लाभ यह अवश्य हुआ कि उस तोतली भाषा को अपनी बात कह सकने की प्रेरणा मिली।

प्रेममार्गी सूफी कवियों की प्रेम परिचित परिधि के बाहर जीवन के अन्य पक्षों पर पहले-पहल लाला श्री निवासदास की दृष्टि गई और उन्होंने अपनी मुख्य रचना 'परीक्षा गुरु' अंग्रेजी उपन्यासों का अध्ययन कर उनके आधार पर लिखी। ठाकुर जगमोहनसिंह द्वारा रचे गये, प्राकृतिक सौन्दर्य में प्रस्फुटित हुए 'श्यामास्वप्न' के पश्चात् पं० अम्बिकादत्त व्यास के आश्चर्य 'वृत्तान्त' और बालकृष्ण भट्ट के 'सौ सुजान एक अजान' के उपरान्त हम हिन्दी के उस युग में आते हैं जब बंकिम, शरत् तथा रवीन्द्र आदि प्रसिद्ध बंगीय उपन्यासकारों के सभी उपादेय रचनाओं के अनुवाद हिन्दी में मिलते हैं। इन अनुवादकों में ईश्वरी प्रसाद तथा रूपनारायण पांडेय विशेषतया स्मरणीय हैं। इसी बीच बाबू देवकीनन्दन खत्री ने ऐय्यारी तथा तिलस्म के ऊपर अपनी 'चन्द्रकान्ता सन्तति' को खड़ा करके घटना-वैचित्र्य का प्रचुर चित्रण किया। प्रेम की रूढ़ कथा और ज्ञान या अनुमित घटनाचक्र के स्थान पर कौतूहलवर्द्धक अनेक कथाओं की यह 'सन्तति' अवश्य ही हिन्दी उपन्यासकाल के विकास में युगावर्तक मानी जाएगी।

घटना-प्रधान उपन्यासों की ओर बढ़ती हुई जनता की प्रवृत्ति को देखकर बाबू गोपालराम गहमरी ने हिन्दी में जासूसी उपन्यासों का सूत्रपात किया, परन्तु प्रेम की सरिता फिर भी अखण्ड बहती रही, जिससे अनुप्राणित होकर श्रीयुत किशोरीलाल गोस्वामीजी ने ऐय्यारी, सामाजिक तथा ऐतिहासिक सभी प्रकार के उपन्यास लिखकर भी उन सब के मूल में कोई-न-कोई स्त्री ही रखी। इसके अनन्तर हमारे सम्मुख पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' लज्जाराम मेहता के 'धूर्त रसिक लाल', 'आदर्श दम्पत्ति', 'आदर्श हिन्दू' और बाबू ब्रजनन्दन सहाय के 'सौन्दर्योपासक', 'राधाकांत' और राजेन्द्र मालती' आदि उपन्यास आते हैं।

इस समय उपन्यास-सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का साहित्य क्षेत्र में पदार्पण हुआ जिन्होंने कृषि-प्रधान भारत के सभी मर्मों को अपनी रचनाओं में मुखरित किया और इस प्रकार उपन्यासधारा को घटना-जाल के संकुचित

Scanned with CamScanner

क्षेत्र से निकालकर नानामुख समाज के व्यापक क्षेत्र में प्रवाहित किया। उन्होंने आर्त्त समाज के चिरंतन संघर्ष से खिन्न हो, समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, समाज तथा राष्ट्र शोधन के पावन ध्येय से प्रेरित हो भारतीय कुटुम्ब की संकुचित परिधि से लेकर समाज तथा राष्ट्र के विशाल से विशाल पटल पर विचार किया और उनमें भी उनकी मार्मिक सहानुभूति तथा संवेदना भारत के उन कोनों में विशेष रूप से पहुँची, जहाँ विवश वेश्याएँ, विधवाएँ, तिरस्कृत भिखमंगे, प्रवंचित किसान और पीड़ित परिश्रमी सब एक के ऊपर एक पड़े हुए आहें भर रहे थे। साथ ही वस्तुविन्यास, चरित्र-चित्रण, मनुष्य की अन्तःप्रकृति के विश्लेषण तथा शैली एवं उद्देश्य की दृष्टि से उनके उपन्यास अत्यन्त उच्च कोटि के हैं। उनकी घटनाएँ इतनी स्वाभाविक, घरेलू, सामाजिक तथा मर्मस्पर्शी हैं कि साक्षर और निरक्षर सभी उन पर मुग्ध हो जाते हैं। उनकी भाषा सरल, सुबोध, संक्षिप्त, पात्रानुकूल, भावपूर्ण तथा सशक्त है। इन्हीं कारणों से उनके उपन्यास 'प्रेमाश्रम', 'गोदान', 'सेवा-सदन', 'रंग-भूमि', 'काया-'कल्प' तथा 'निर्मला' आदि हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि हैं।

प्रेमचन्द के उपरान्त हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में एक बाढ़ आई जिससे प्रभावित होकर कवि हृदय प्रसिद्ध नाटककार प्रसाद ने 'कंकाल' और 'तितली' दो महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे। इसी प्रकार वृन्दावनलाल वर्मा ने 'मृगनयनी' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन का बड़ा ही सुन्दर विवेचन किया। इसके बाद विश्वम्भरनाथ कौशिक, उग्र, जैनेन्द्र कुमार, मोहनलाल महतो, सुमित्राकुमारी सिन्हा, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा आदि जाति-पाँति, छुआछूत, वर्ण-व्यवस्था, जाति-विद्वेष के विरुद्ध तथा उनके खण्डन में उपन्यास-क्षेत्र में लगे रहे हैं। शैली आदि की भी दृष्टि से यशपाल, अज्ञेय आदि हमारी भविष्य की आशाओं के प्रदीप हैं, जो मार्क्सवादी तथा मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के प्रणयन में संलग्न हैं।

"समकालीन उपन्यास की दो धाराएँ साफ-साफ देखी जा सकती हैं—वर्णन प्रधान उपन्यास और सूक्ष्म अनुभवपरक उपन्यास। हिन्दी में प्रेमचन्द के बाद उपन्यास की भाषा को नये ढंग से गलाने का काम किया है जैनेन्द्र ने। इस दृष्टि से 'त्यागपत्र' उपन्यास साहित्य की बेजोड़ उपलब्धि है। यहाँ जैनेन्द्र शब्दों में उतना काम नहीं लेते, जितना उनकी भंगिता से। जैनेन्द्र के साथ अज्ञेय का नाम आता है। इन दोनों ने मिलकर भाषा को वर्णन के प्राथमिक स्तर से ऊपर उठाया।"

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II
हिन्दी शिक्षण ने 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्त्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और श्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य

उपन्यास-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. छात्रों में स्वाध्याय की आदत डालना।
2. स्वाध्याय में छात्रों को आत्मनिर्भर बनाना।
3. छात्रों को स्वस्थ मनोरंजन की ओर उन्मुख करना।
4. उन्हें कुशल अध्ययन की तकनीकियों को समझाकर उन पर अधिकार प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करना।
5. छात्रों को द्रुतगति से मौन वाचन का अभ्यास कराना।
6. उन्हें उपन्यास की कथावस्तु से परिचित कराना।
7. उन्हें उपन्यास के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का ज्ञान देना और उत्तम गुणों को स्वयं अपनाने की प्रेरणा प्रदान करना।
8. छात्रों को कथोपकथन की विभिन्न रीतियों से परिचित कराना।
9. उन्हें उपन्यास द्वारा दिये गये सन्देश एवं जीवन के उद्देश्य से परिचित कराना।
10. उन्हें घटनाओं पर सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के प्रभाव से परिचित कराना।
11. उन्हें भाषा एवं शैली के प्रचलित रूपों से परिचित कराना।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण ने 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी - गद्य का विकास
c. गद्य - शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य - पाठ और श्रुत - पाठ
e. गद्य - पाठ के रूप
f. गद्य - पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य - पाठ
h. गद्य की पाठ्य - पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास - साहित्य का विकास
e. उपन्यास - शिक्षण
f. उपन्यास - शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास - शिक्षण विधि
h. शिक्षण - क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी - नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक - शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक - शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक - शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

शिक्षण-क्रम

उपन्यास की शिक्षा देने में किसी विशेष पाठ-योजना के निर्माण की आवश्यकता नहीं पड़ती, किन्तु अध्यापक को अपने कार्य को समुचित रूप में क्रमबद्ध कर लेना लाभदायक हो सकता है। इस दृष्टि से निम्नलिखित क्रम शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकता है—

(क) **प्रस्तावना**—उपन्यास की ओर छात्रों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए दो-तीन प्रश्न पूछ लेना ठीक रहेगा। ये प्रश्न उपन्यास की कथावस्तु से सम्बन्धित हो सकते हैं।

(ख) **प्रस्तुतीकरण**—(1) उपन्यास की कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन; भाषा, शैली, उद्देश्य एवं देशकाल के सम्बन्ध में सारांश रूप में अध्यापक कथन।

(2) कक्षा के छात्रों को सात वर्गों में बाँट देना और प्रत्येक वर्ग को एक तत्त्व सौंप देना। इस प्रकार एक वर्ग कथानक का अध्ययन करेगा तो दूसरा वर्ग पात्रों का। अन्य वर्ग तत्त्वों का विशेष अध्ययन करेंगे।

(3) अध्यापक उपयुक्त निर्देश दे देगा; जैसे—मुख्य बिन्दुओं को ठीक से देखो, अर्थ जानने के लिए शब्दकोष को देखो, विशेष कठिनाई के सम्बन्ध में मुझसे परामर्श करो, अध्ययन के लिए समय व स्थान निश्चित कर लो आदि।

(ग) **स्वाध्याय**—छात्रों से तथ्य संग्रह के लिए कहना। प्रत्येक वर्ग अपने-अपने पाठ्य-बिन्दु के सम्बन्ध में उपन्यास में से सामग्री जुटायेगा। यह सोपान छात्रों के स्वाध्याय का है। छात्र पुस्तकालय में या घर पर या हिन्दी-कक्ष में उपन्यास का अध्ययन करें और मुख्य बिन्दुओं को लिख लेंगे।

(घ) **प्रतिवेदन**—इस सोपान में भी छात्र एकत्र होंगे। वे अपनी सामग्री प्रस्तुत करेंगे। अध्यापक उन सामग्रियों में संशोधन करता चलेगा और सभी छात्र उपन्यास के सभी तत्त्वों से परिचित हो जायेंगे। यह कार्य वर्णन पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से होगा।

(ङ) **समीक्षा**—उपन्यास की कथावस्तु देशकाल, पात्र, भाषा-शैली, कथनोपकथन एवं उद्देश्यों की आलोचना की जायेगी। सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया जायेगा। यह कार्य प्रश्नोत्तर विधि से होगा।

(च) **मूल्यांकन**—छात्र उपन्यास के तत्त्वों से परिचित हुए या नहीं, इसके लिए कुछ प्रश्न किए जायेंगे और उनसे सारांश लिखने को कहा जायेगा।

●●

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण ने 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और द्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यास-शिक्षण विधि

किसी उपन्यास की शिक्षा देने के पूर्व अध्यापक को स्वयं उस उपन्यास को पढ़ लेना चाहिए और उसके प्रमुख बिन्दुओं को नोट कर लेना चाहिए। उपन्यास को पढ़ना वर्तमान समय-सारणी में सम्भव नहीं हो पाता। इसके लिए यदि पृथक् रूप से हिन्दी के अध्ययन-कक्ष में छात्रों को बुलाकर उनसे अध्ययन करने को कहा जाए तो अधिक अच्छा रहेगा। वर्तमान परिस्थितियों में हिन्दी के एक घण्टे में किसी उपन्यास का पूरा हो पाना कठिन है। इसलिए अध्यापक गद्य की भाँति कई दिन तक पढ़ाते रहते हैं। अतः यदि महीने में एक दो-तीन घण्टे इस कार्य के लिए एक साथ दिये जाएँ तो अधिक अच्छा होगा।

उपन्यास-शिक्षण में अध्यापक द्वारा दिये गए निर्देशन का महत्त्व है। यह निर्देशन दो प्रकार से दिया जा सकता है। अध्यापक प्रारम्भ में ही छात्रों को उपन्यास का सारांश लिखा दें और तत्पश्चात् कथोपकथन, कथावस्तु, पात्र, शैली, भाषा, उद्देश्य आदि की चर्चा कर लें और उसके बाद छात्र उपन्यास को मौन रूप से पढ़ें तथा प्रत्येक छात्र उपन्यास के सभी तत्त्वों की विशद् व्याख्या लिखें। बाद में अध्यापक सभी छात्रों की पुस्तिकाओं का अवलोकन करके उनकी त्रुटियों का संकेत कर दें और उपन्यास के सारांश को आवश्यकता पड़ने पर पुनः लिखा दें। संयुक्त राज्य अमेरिका में यही विधि प्रचलित है। दूसरी विधि फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों में प्रचलित है जिससे बालकों को उपन्यास के सम्बन्ध में उचित निर्देशन दे दिये जाते हैं, उपन्यास की पुस्तक एवं उससे सम्बद्ध सहायक पुस्तकें बना दी जाती हैं, पुस्तकों के पृष्ठ भी बता दिये जाते हैं। तत्पश्चात् छात्र पुस्तकालय में, हिन्दी-कक्ष में या घर पर स्वेच्छापूर्वक उपन्यास का अध्ययन करते हैं। दूसरे दिन उपन्यास के विभिन्न तत्त्वों पर प्रश्न किये जाते हैं। विभिन्न तत्त्वों की कक्षा में चर्चा एवं आलोचना होती है। सभी छात्र अपनी राय देते हैं और शिक्षक अपनी विशेष राय भी देना चाहता है। अन्त में शिक्षक सभी बातों का संशोधन करके एक सुनिश्चित रूपरेखा प्रदान कर देता है। आवश्यकता पड़ने पर इस रूपरेखा को विकसित करने के लिए अध्यापक छात्रों को निर्देश दे सकता है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II
हिन्दी शिक्षण – 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी-गद्य का विकास
c. गद्य-शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य-पाठ और द्रुत-पाठ
e. गद्य-पाठ के रूप
f. गद्य-पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य-पाठ
h. गद्य की पाठ्य-पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास-साहित्य का विकास
e. उपन्यास-शिक्षण
f. उपन्यास-शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास-शिक्षण विधि
h. शिक्षण-क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी-नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक-शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक-शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक-शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By: Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यास-शिक्षण विधि

किसी उपन्यास की शिक्षा देने के पूर्व अध्यापक को स्वयं उस उपन्यास को पढ़ लेना चाहिए और उसके प्रमुख बिन्दुओं को नोट कर लेना चाहिए। उपन्यास को पढ़ना वर्तमान समय-सारणी में सम्भव नहीं हो पाता। इसके लिए यदि पृथक् रूप से हिन्दी के अध्ययन-कक्ष में छात्रों को बुलाकर उनसे अध्ययन करने को कहा जाए तो अधिक अच्छा रहेगा। वर्तमान परिस्थितियों में हिन्दी के एक घण्टे में किसी उपन्यास का पूरा हो पाना कठिन है। इसलिए अध्यापक गद्य की भाँति कई दिन तक पढ़ाते रहते हैं। अतः यदि महीने में एक दो-तीन घण्टे इस कार्य के लिए एक साथ दिये जाएँ तो अधिक अच्छा होगा।

उपन्यास-शिक्षण में अध्यापक द्वारा दिये गए निर्देशन का महत्त्व है। यह निर्देशन दो प्रकार से दिया जा सकता है। अध्यापक प्रारम्भ में ही छात्रों को उपन्यास का सारांश लिखा दें और तत्पश्चात् कथोपकथन, कथावस्तु, पात्र, शैली, भाषा, उद्देश्य आदि की चर्चा कर लें और उसके बाद छात्र उपन्यास को मौन रूप से पढ़ें तथा प्रत्येक छात्र उपन्यास के सभी तत्त्वों की विशद् व्याख्या लिखें। बाद में अध्यापक सभी छात्रों की पुस्तिकाओं का अवलोकन करके उनकी त्रुटियों का संकेत कर दें और उपन्यास के सारांश को आवश्यकता पड़ने पर पुनः लिखा दें। संयुक्त राज्य अमेरिका में यही विधि प्रचलित है। दूसरी विधि फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों में प्रचलित है जिससे बालकों को उपन्यास के सम्बन्ध में उचित निर्देशन दे दिये जाते हैं, उपन्यास की पुस्तक एवं उससे सम्बद्ध सहायक पुस्तकें बना दी जाती हैं, पुस्तकों के पृष्ठ भी बता दिये जाते हैं। तत्पश्चात् छात्र पुस्तकालय में, हिन्दी-कक्ष में या घर पर स्वेच्छापूर्वक उपन्यास का अध्ययन करते हैं। दूसरे दिन उपन्यास के विभिन्न तत्त्वों पर प्रश्न किये जाते हैं। विभिन्न तत्त्वों की कक्षा में चर्चा एवं आलोचना होती है। सभी छात्र अपनी राय देते हैं और शिक्षक अपनी विशेष राय भी देना चाहता है। अन्त में शिक्षक सभी बातों का संशोधन करके एक सुनिश्चित रूपरेखा प्रदान कर देता है। आवश्यकता पड़ने पर इस रूपरेखा को विकसित करने के लिए अध्यापक छात्रों को निर्देश दे सकता है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण ने 'A'

Unit : III * गद्य तथा गद्य की विभिन्न विधाओं का शिक्षण

a. गद्य का महत्व
b. हिन्दी - गद्य का विकास
c. गद्य - शिक्षण के उद्देश्य
d. गद्य - पाठ और श्रुत - पाठ
e. गद्य - पाठ के रूप
f. गद्य - पाठ में शब्द और अर्थ का सम्बन्ध
g. अपठित गद्य - पाठ
h. गद्य की पाठ्य - पुस्तक
i. शिक्षण विधि

* उपन्यास तथा उसका शिक्षण

a. उपन्यास क्या है
b. उपन्यास का वर्गीकरण
c. उपन्यास के तत्व
d. उपन्यास - साहित्य का विकास
e. उपन्यास - शिक्षण
f. उपन्यास - शिक्षण के उद्देश्य
g. उपन्यास - शिक्षण विधि
h. शिक्षण - क्रम

* नाटक तथा उसका शिक्षण

a. नाटक की उत्पत्ति
b. नाटक तत्वों के सिद्धान्त
c. हिन्दी नाटक का विकास
d. हिन्दी - नाटक के आधुनिक भेद
e. नाटक - शिक्षण के उद्देश्य
f. नाटक - शिक्षण की प्रणालियाँ
g. नाटक - शिक्षण में कुछ ध्यान देने योग्य बातें

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

उपन्यास-शिक्षण

उपन्यास से समुचित लाभ तभी उठाया जा सकता है जब इसका अध्ययन सावधानी से किया जाए। छात्रों को इस बात की शिक्षा दी जानी चाहिए कि वे अच्छे उपन्यासों का अध्ययन करके उनके सन्देशों को ग्रहण कर सकें। उपन्यास-शिक्षण के अभाव में छात्र अश्लील उपन्यासों की ओर उन्मुख हो सकते हैं। ऐसी दशा में लाभ की अपेक्षा हानि होने की सम्भावना है।

उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में कोई-न-कोई उपन्यास स्वीकृत भी रहता है। उपन्यास का शिक्षण गद्य या पद्य के शिक्षण के समान नहीं चल सकता। इसके शिक्षण के स्वाध्याय को प्रोत्साहन देने की बात बहुत महत्व रखती है। छात्र स्वयं उपन्यास का अध्ययन करें, यही इस शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य है।

Scanned with CamScanner